International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

"महात्मा गाँधी जी की बुनयादी शिक्षा और नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की प्राथमिक शिक्षा का समीक्षात्मक अध्ययन"

डॉ० विनोद कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर (स्कूल ऑफ एजुकेशन)
शोभित विश्वविद्यालय,गंगोह
सहारनपुर-उत्तर प्रदेश

सार-

महात्मा गाँधी जी का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने भारत को आजाद कराने मे ही योगदान नही दिया अ पुति एक महान सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद् के रूप में कर्म आधारित मूल्यवादी शिक्षा योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की , जो बुनियादी शिक्षा योजना , वर्धा शिक्षा योजना या बेसिक शिक्षा योजना के नाम से जा नी जाती है। यह शिक्षा योजना सामान्य ज्ञान (पढ़ना-लिखना) के साथ-साथ बालक के सर्वांगीण विकास की बात करती है। इसी क्रम में आधुनिक समय की नई शिक्षा नीति-2020 भी इस बात को स्वीकार कर ती है कि बालक का सर्वांगीण विकास ही महत्वपूर्ण है , केवल सामान्य ज्ञान (पढ़ना-लिखना) दे ना आधुनिक समाज की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं होगा। क्योकि आधुनिक समाज की आवश्यकता की पूर्ति करना भी शिक्षा का अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य हो गया है औ यह तभी सम्भव हो सकेगा जब हम शिक्षा को समाज की आवश्यकता के अनुसार देना प्रारम्भा कर देंगे अर्थात् एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिससे वालक के अन्दर चारित्रिक निर्माण के साथ साथ कौशल का विकास भी किया किया जा सके |

महात्मा गाँधी जी और बुनयादी शिक्षा-

महात्मा गाँधी जी का नाम लेते ही एक ऐसे व्यक्तित्व की छवि सामने प्रस्तुत हो जाती है कि उसकी व्याख्या कर ना अत्यन्त ही जटिल है। विश्व के सबसे महान एवं विद्वान व्यक्ति माने जाने वाले अलबर्ट आइस्टीन ने महात्मा गांधी के व्यक्तित्व के विषय में जो कहा शायद वह भी पर्याप्त नहीं है। महात्मा गाँधी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज की सेवा में लगा दिया। यदि यह कहा जाय कि उनका जन्म ही समाज की सेवा और उद्धार के लिए हुआ था तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि उन्होंने भारतीय समाज के उत्थान के लिए जो किया वह शायद ही कोई कर सके।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

महात्मा गाँधी जी ने अत्यन्त राजनीतिक व्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने सामाज की वास्तविक परिस्थति को जाना और उसमें परिवर्तन लाने का प्रण किया। उनका मानना था कि यदि समाज में वास्तविक और स्थाई परिवर्तन लाना है तो सर्वप्रथम समाज को शिक्षित करना होगा | शिक्षा के बिना वर्तमान समाज की मानसिक गुलामी को नहीं बदल सकते। स्वतंत्रता से पूर्व जो ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली थी वह भारतीय समाज की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना के अनुरूप नहीं थी। समाज का एक बहुत बड़ा भाग शिक्षा से वंचित था। वंचितों की शिक्षा के उद्देश्य से गांधी जी ने तत्कालीन भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा योजना की रूप रेखा तैयार की जो समाज की सामाजिक एवं आर्थिक दोनों समस्याओं की पूर्ति कर सके। जिसे आज हम वर्धा शिक्षा योजना या बेसिक शिक्षा या बुनियादी शिक्षा (23 अक्टूबर 1937) के नाम से जानते हैं। इस शिक्षा योजना की सबसे बड़ी विशेषता थी समाज की आर्थिक समस्याओं की पूर्ति । गाँधी जी को यह विश्वास था कि यदि व्यक्ति की शिक्षा के साथ -साथ आर्थिक आवश्यकता की भी पूर्ति होती है तो प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा के प्रति जागरूक होगा। और इस प्रकार हम ब्रिटिश सत्ता की गुलामी से मुक्ति पा सकेंगे | इसलिए उन्होंने अपनी बुनयादी शिक्षा योजना मे सैद्धान्तिक की जगह व्यवहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया ।

सन 1937 ई0 वर्धा में हो रहे "अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन" में गाँधी जी ने अपनी बेसिक शिक्षा योजना की रूप रेखा प्रस्तुत की इसी कारण इस शिक्षा योजना को वर्धा शिक्षा योजना के नाम से भी जाना जाता है। इस बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य यह था कि शिक्षार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ कुछ धनोपार्जन भी हो सके जिससे वह अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सके । गाँधी जी एक उच्च कोटि के सामाजिक कार्यकर्ता और महान शिक्षाविद थे | उन्होने भारतीय समाज की तात्कालिक और भविष्य की स्थिति को समझते हुए उसके अनुरूप और प्रत्येक शिक्षार्थी की रुचि और क्षमता के अनुसार व्यवसायिक कौशल विकसित करने पर आधिक बल दि या, अर्थात बुनि यादी शिक्षा का पहला उद्देश्य शिक्षार्थी की बुनियादी आवश्यकता की पूर्ति करना था| यदि हम गांधी जी की वर्धा शिक्षा योजना को Learn with Earn के नाम से पुकारे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योकि यह आधुनिक भारत की आवश्यकता बन गयी है।

बेसिक शिक्षा का दूसरा प्रमुख उद्देश्य था भारतीय समाज एवं संस्कृति का संरक्षण | गांधी जी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि भारतीय समाज ब्रिटिश सत्ता से प्रभावित होकर अपनी वास्तविक संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है। इसलिए उन्होंने शिक्षा में बुनियादी अवश्यकता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

की पूर्ति के साथ - साथ भारतीय संस्कृति के संरक्षण पर विशेष ब ल दिया । शिक्षार्थियों में नैतिक मूल्यों के विकास विकास हेतु उन्होने शिक्षा योजना मे निम्नलिखित बिन्दुओ पर विशेष बल दिया-

- प्रत्येक विद्दार्थी को उसकी मातृभाषा में शिक्षा की व्यवस्था हो|
- स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित शिक्षा |
- बुनयादी आवश्यकताया की पूर्ति होना |
- व्यवसायिक कौशल का विकास करना |
- 7-14 वर्ष के बालकों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करना |
- 'श्रम में शर्म नहीं' की भावना को विकसित करना |
- नैतिक मूल्यों का विकास करना |
- भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं विकास करना |
- शिक्षा स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित होना |
- बालिकाओं हेतु गृह विज्ञान की शिक्षा व्यवस्था करना |
- हस्त कौशल का विकास करना |
- भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुसार हस्तशिल्प कला का विकास करना |

भारतीय शिक्षा पद्धति अत्यन्त ही प्राचीन शिक्षा पद्धति है। इसका उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करना है। आदिकाल से ही भारतीयों में शिक्षा के प्रति आदर भाव रहा है। सिंधु सभ्यता के प्रमाण वह बताते है कि भारतीय शिक्षा पद्धति कितनी प्राचीन और विकासत थी।

15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिलने के बाद सम्पूर्ण भारतीय जनता खुले आसमान के नीचे सास लेने के लिए स्वतंत्र हो गई। आजादी के बाद सबसे बड़ी चुनौती थी आर्थिक एवं शैक्षिक व्यवस्था करना ।आर्थिक समस्या का समाधान करने का एक मात्र साधन था शिक्षा जो कि वर्तमान समय में सभी के लिए सर्वसुलभ नहीं थी | इन्ही सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए भारत की प्रथम शिक्षा नीति -1968 में लागू की गई। समय के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन होता गया । सामाजिक परिवर्तन के बाद समाज की आर्थिक दशा में सुधार होने के साथ-साथ उसकी आवश्यकता भी बढ़ती गई जिसकी पूर्ति हेतु प्रथम शिक्षा नीति 1968 में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुए नई शिक्षा नीति-1986 को लागू किया गया, जिसका प्रमुख उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को शिक्षित करना था ताकि सभी लोग जागरूक हो सके और वह अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों को जान सके |

नई शिक्षा नीति-2020 और प्राथमिक शिक्षा -

आधुनिक युग (21वी सदी) को वैज्ञानिक युग के नाम से जाता जाता है किन्तु इस वैज्ञानिक युग में पहुंचने के बाद भी हम पुरानी शिक्षा नीति का पालन करते आ रहे थे जो कि आधुनिक समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति सही ढंग से नही कर पा रही थी । ऐसी स्थिति में भारत को एक नई शिक्षा नीति की आवश्यकता थी, और इसी को ध्यान मे रखते हुए नई शिक्षा नीति की कार्ययोजना की रूपरेखा तैयार की गई ,और इसको पूर्ण होने के पश्चात 29 जुलाई 2020 को पूर्ण रूप से लागू कर दिया गया |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आधुनिक समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए लागू की गई है जो वर्तमान की आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का सामना करने मे सक्षम हो सके । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थी का सम्पूर्ण विकास अर्थात शिक्षा समावेशी रोजगारपरक एवं शोध आधारित होनी चाहिए। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा का समर्थन करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भाग है। प्राथमिक शिक्षा को सम्पूर्ण शिक्षा की नीव मा ना गया है अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीती 2020 यह स्वीकार करती है कि शिक्षा की नीव (प्राथमिक शिक्षा) को मजबूत किए बिना लक्ष्यों को प्राप्त करना बहुत ही कठिन कार्य होगा। नई शिक्षा नीति 2020 में प्राथमिक शिक्षा की प्रमुख विशेषताए-

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना |
- सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े बालको की शिक्षा व्यवस्था करना ।
- शिक्षा लचीली,बहुआयामी, बहुस्तरीय,खेल आधारित और खोज आधारित होनी चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होगा और स्थानीय भाषा से परिचित शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी ।
- पाठ्यचर्या में बुनियादी शिक्षा और संख्या ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया जाए |

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

- विद्यालय के पुस्तकालयों में स्थानीय भाषा में प्रेरणादायक बाल साहित्य उपलब्ध करा ना ।
- बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य में सुधार हेतु विद्यालय स्तर पर पोष्टिक भोजन एवं स्वच्छता अभियान पर विशेष ध्यान रखना।
- स्कूलों में बच्चों का शत-प्रतिशत नामांकन एवं ठहराव
- सुनिश्चित किया जाएगा |
- गतिविधि आधारित शिक्षा प्रदान करना।
- शिक्षा का उद्देश्य संज्ञानात्मक न होकर चारित्रिक निर्माण और कौशल विकास सुनिश्चित करना होगा|
- पाठ्यक्रम की विषय वस्तु को कम करके बुनियादी चीजों पर ध्यान केन्द्रित किया जाएगा।
- प्राथमिक स्तर पर अनिवार्यतः प्रायोगिक अधिगम स्तर को अपनाया जाएगा
- प्रत्येक विद्यार्थी की जन्मजात प्रतिभाओं की पहचान करना और उनका विकास करना।

निष्कर्ष-

महात्मा गाँधी जी की बुनियादि शिक्षा और नई शिक्षा नीति -2020 की प्राथमिक शिक्षा का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि दोनों शिक्षा नीति में सैद्धान्तिक शिक्षा के स्थान पर व्यवहारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है क्योंकि व्यवहारिक शिक्षा के द्वारा ही बच्चे का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा । इस कथन में किसी प्रकार की अतिश्योक्ति नहीं है , कि प्राथमिक शिक्षा या बुनियादी शिक्षा ही सम्पूर्ण शिक्षा की नीव है।

आज से लगभग 85 वर्षो पूर्व महात्मा गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा की नींव रखी और यह प्रयास किया कि बच्चों का सर्वांगीण विकास (शारिरिक,मानसिक व आर्थिक) पूर्ण रूप से किया जा सके। इतने समय के अन्तराल के बाद भी वर्तमान समय की नई शिक्षा नीति-2020 में भी प्राथमिक स्तर की शिक्षा पर बुनियादी शिक्षा के ढांचे का पालन कर रहे है क्योकि शिक्षा बालक की प्रथम आवश्यकता होती है। और शिक्षा के बिना बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव नहीं है अतः प्रत्येक सरकार का यह उत्तर दायित्व बंता है कि वह समाज की परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार शिक्षा प्रदान करना सुनिश्चित करे।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 7, July- 2023
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- पाण्डेय राम शकल, आधुनिक भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- पाल०एस० के० महान , (2020) पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन,16-विवेकानन्द मार्ग , इलाहाबाद
- माथुर डॉ०एस०एस०(1997) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार , विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- मेहदीस्ता कुलदीप, (2020) गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता , राष्ट्रीय शिक्षा(जर्नल)।
- सिंह वी०एन०(2020), भारतीय सामाजिक चिंतन, विवेक प्रकाशन-दिल्ली
- श्रीवास्तव अंजू(2017), गाँधी जी का बुनियादी शैक्षिक दर्शन , JASRE. इग्नाइटेड माइंड (जर्नल)

Websites-

- https://www.education.gov.in
- https://www.drishtias.com
- https://www.rashtriyashiksha.com
- https://www.educationmirror.org
- https://www.allresearchjournal.com
- https://www.researchgat.net